पञ्चाङ्ग तथा तिथिविचार

डा० धनञ्जय वासुदेव द्विवेदी

सहायक प्रोफेसर, संस्कृत विभाग,

डा० श्यामा प्रसाद मुखर्जी विश्वविद्यालय, राँची

विभिन्न आकाशीय सूचनाओं से युक्त विस्तृत तिथि पत्र एवं कालदर्शक को पञ्चाङ्ग कहा जाता है। इसमें तिथि, वार, नक्षत्र, योग और करण ये पाँच अंह होते हैं। इन्हीं पाँच अंगों के कारण इसे पञ्चाङ्ग भी कहा जाता है। तिथि, नक्षत्र आदि का साधन चन्द्रमा और सूर्य के योगांशों से किया जाता है। इसीलिए भारतीय पञ्चाङ्गों को चान्द्र-सौर पञ्चाङ्ग भी कहा जाता है। अमान्त को आकाश में चन्द्र एवं सूर्य का क्रान्तिवृत्तीय आभासिक पूर्वापरान्तराभाव होता है।

पञ्चाङ्ग की आवश्यकता

सम्प्रति सम्पूर्ण विश्व के साथ-साथ भारत में भी खीष्टीय सौर पञ्चाङ्ग का प्रचलन अधिक है जिससे अतिसामान्य दिनाङ्क वार-मास एवं वर्ष की ही गणना की जाती है, किन्तु धार्मिक एवं सामाजिक जीवन के लिए भारतीय पञ्चाङ्गों की उपादेयता अधिक है। हमारे व्रतपर्वोत्सव प्रायः चान्द्रमासों एवं ऋतुओं के सहसम्बन्ध पर आश्रित है। यज्ञोत्सव-व्रत-पर्वादि के सम्यक् निर्धारण के लिए पञ्चाङ्ग की आवश्यकता होती है। जैसे रामनवमी, जन्माष्टमी, रक्षाबन्धन, विजयादशमी, होली, दीपावली आदि पर्वमहोत्सव, एकादशी, चतुर्थी, पूर्णिमा आदि व्रत, ग्रहणकाल, संक्रान्ति, महावारुणी, कुम्भयोगादि, पितरों के श्राद्धतिथिज्ञान, नवरात्रि में घटस्थापनादि, यात्रा-वास्तु-गृहप्रवेश आदि मुहूर्त, षोडशसंस्कार, भद्रा-रिक्ता-पञ्चक-गण्डमूलादि दोषों का ज्ञान आदि सभी पञ्चाङ्ग की सहायता से निर्धारित होते हैं। ग्रामीण अञ्चलों में वृष्टि पूर्वानुमान तिथि-नक्षत्र वारादिकों में वायुसञ्चरण के अनुसार ही ग्रामीणजन कर लिया करते हैं। सामाजिक कार्यों में भी जैसे जलाशय-खनन-भवननिर्माणादि के लिए शुभकाल का ज्ञान एवं सामाजिक महोत्सवों के निर्धारण के लिए पञ्चाङ्ग की आवश्यकता होती हैं। इसीलिए भारत सरकार द्वारा भी 'राष्ट्रीय पञ्चाङ्ग' का प्रकाशन प्रतिवर्ष किया जाता है।

E-Learning material prepared by Dr. Dhananjay Vasudeo Dwivedi

पञ्चाङ्ग का उद्भव-

धर्मपरायण भारतवर्ष में पञ्चाङ्ग का व्यवहार अतिप्राचीनकाल से चला आ रहा है। यह कहना अतिशयोक्तिपूर्ण नहीं होगा कि पञ्चाङ्ग का प्रचलन उस काल से आरम्भ हुआ जिस काल में ज्योतिषविषयक ज्ञान प्रारम्भिक अवस्था में रहा होगा। वस्तुतः पञ्चाङ्ग का उद्भव किस समय हुआ तथा किस कालखण्ड में उसका व्यवहार में सर्वप्रथम प्रचलन हुआ, यह कहना अति कठिन है किन्तु वैदिक वाङ्मय में पञ्चाङ्ग के कतिपय अङ्गों का विस्तृत एवं विकसित वर्णन से अनुमान किया जाता है कि यह ज्ञान वैदिककाल से ही विद्यमान रहा होगा। वैदिकसाहित्य में उपलब्ध पञ्चाङ्ग विषयक वर्णन से अनुमान होता है कि उस काल में चान्द्रसौर पञ्चाङ्ग प्रचलन में था। काल के संवत्सर, अयन, ऋतु, मास, पक्ष, दिवस, मुहूर्तादि विभाग व्यवहार में थे। एक वर्ष में 12 मास एवं 13 मास दोनों का ही वर्णन चान्द्रसौर पञ्चाङ्ग पद्धति का समर्थन करता है। चान्द्रमासों एवं ऋतुओं के सामाञ्जस्य के लिए अधिमास प्रक्षेपण की कोई विधि अवश्य ही उस काल में विकसित रही होगी। वेदाङ्गों, स्मृतिग्रन्थों, महाकाव्यों आदि में पञ्चाङ्गों का संकेत किसी-न-किसी रूप प्राप्त होता है। पश्चात् ज्योतिषग्रन्थों में पञ्चाङ्ग का विस्तृत विवेचन प्राप्त होता है।

पञ्चाङ्ग विचार

ज्योतिषशास्त्र सम्बन्धी ज्ञान के लिए सर्वप्रथम पञ्चाङ्ग की आवश्यकता पड़ती है। पञ्चाङ्ग शब्द से पाँच अङ्गों का बोध होता है। ये पाँच अङ्ग हैं- तिथि, वार, नक्षत्र, योग और करण।कहा भी गया है-

तिथिवारं च नक्षत्रं योगः करणमेव च।

यत्रैतत् पञ्चकं स्पष्टं पञ्चाङ्गं तदुदीरितम्।।

क्रमवार इनका विवेचन आगे किया जा रहा है।

तिथि-

चन्द्रमा की एक कला को तिथि माना जाता है। इसे सूर्य और चन्द्रमा के आन्तरांश को 92 से भाग देकर ज्ञात किया जाता है। भ चक्र (राशि चक्र) में 360 अंश होते हैं तथा तिथियों की संख्या 30 है। अतः 360/30=12 अंश की एक तिथि होती है। तिथि का मान चन्द्रमा एवं सूर्य के अंशों में अन्तर

करने पर आता है। प्रतिपदा से पूर्णिमा तक 15 तिथियाँ शुक्लपक्ष में तथा प्रतिपदा से अमावस्या तक 15 तिथियाँ कृष्णपक्ष होती है। पूर्णिमा को 15 तथा अमावस्या को 30 संख्या से व्यक्त किया जाता है। पूर्णिमा और अमावस्या के अतिरिक्त शेष प्रतिपदा, द्वितीया, तृतीया, चतुर्थी, पञ्चमी, षष्ठी, सप्तमी, अष्टमी, नवमी, दशमी, एकादशी, द्वादशी, त्रयोदशी तथा चतुर्दशी दोनों में पक्षों में समान रूप से होते हैं।

तिथियों के स्वामी देवता होते हैं जिसे सारणी 1 के माध्यम से बताया जा रहा है-

सारणी 1

तिथि	**स्वामी**
प्रतिपदा	अग्नि
द्वितीया	ब्रह्मा
तृतीया	गौरी
चतुर्थी	गणेश
पञ्चमी	नाग
षष्ठी	कार्तिकेय
सप्तमी	सूर्य
अष्टमी	शिव
नवमी	दुर्गा
दशमी	काल
एकादशी	विश्वेदेव
द्वादशी	विष्णु
त्रयोदशी	कामदेव
चतुर्दशी	शिव
पौर्णमासी	चन्द्रमा

E-Learning material prepared by Dr. Dhananjay Vasudeo Dwivedi

अमावस्या	पितर

तिथियों की वृद्धि एवं क्षय एवं तिथिनिर्णय

तिथि में वृद्धि-क्षय होते हैं। कभी-कभी एक तिथि दो दिन की हो जाती है जिसे तिथि की वृद्धि कहते हैं कभी एक तिथि का लोप हो जाता है जिसे तिथि का क्षय कहते हैं। जिस कर्म का जो काल हो, उस काल में व्याप्त तिथि हो तब कर्म करना चाहिए। तिथि के क्षय-वृद्धि से कोई मतलब नहीं। सूर्योदय से मध्याह्न तक जो तिथि न हो, वह खण्डित है। उसमें व्रतों का आरम्भ अथवा समाप्ति नहीं होती है। एकादशी के लिए सूर्योदयव्यापिनी तिथि लेनी चाहिए। यदि दो दिन उदय-व्यापिनी हो तो दूसरे दिन व्रत करना चाहिए। यदि दोनों दिन उदयकाल में न हो तो पूर्व दिन व्रत करना चाहिए। जिस तिथि में सूर्योदय हो, उस तिथि को दान, अध्ययन तथा पूजाकर्म में पूर्ण मानना चाहिए। दैवकर्म में पूर्वाह्णव्यापिनी, श्राद्ध में कुतुपकाल (8वाँ मुहूर्त) व्यापिनी तिथि लेनी चाहिए। नक्त(रात्रि)व्रतों में प्रदोषव्यापिनी तिथि लेनी चाहिए।

तिथियों का फल-

प्रतिपदा सिद्धि देने वाली है, द्वितीया कार्यसाधन करने वाली है, तृतीया आरोग्य देने वाली है, चतुर्थी हानिकारक है, पञ्चमी शुभ देने वाली है, षष्ठी अशुभ है, सप्तमी शुभ है, अष्टमी व्याधिनाश करती है, नवमी मृत्यु देने वाली है, दशमी द्रव्य देने वाली है, एकादशी शुभ है, द्वादशी-त्रयोदशी सब प्रकार की सिद्धि देने वाली है, चतुर्दशी उग्र है, पौर्णमासी पुष्टि देने वाली है तथा अमावस्या अशुभ है-

प्रतिपत्सिद्धिदा प्रोक्ता द्वितीया कार्यसाधिनी।

तृतीयारोग्यदात्री च हानिदा च चर्तुथिका।।

शुभा तु पञ्चमी ज्ञेया षष्ठिका त्वशुभा मता।

सप्तमी तु शुभाज्ञेया अष्टमी व्याधिनाशिनी।।

मृत्युदात्री तु नवमी द्रव्यदा दशमी तथा।

एकादशी तु शुभदा द्वादशी सर्वसिद्धिदा।।

त्रयोदशी सर्वसिद्धा ज्ञेया चोग्रा चतुर्दशी।

पुष्टिदा पूर्णिमा ज्ञेया त्वमावास्याऽशुभा मता।।

तिथियों की संज्ञाएं

क) **नन्दा तिथि**- प्रतिपदा, षष्ठी और एकादशी को नन्दा तिथि कहा जाता है। चित्रकला, नृत्य, नाट्यादि उत्सव, गृहनिर्माण, तान्त्रिक कार्य, कृषिकर्म नन्दा तिथियों में शुभ हैं।

ख) **भद्रा तिथि**- द्वितीया, सप्तमी और द्वादशी को भद्रा तिथि कहा जाता है। विवाह, वस्त्रभूषणादि निर्माण, यात्रा, पौष्टिक कर्म भद्रा तिथियों में शुभ हैं।

ग) **जया तिथि**- तृतीया, अष्टमी और त्रयोदशी को जया तिथि कहा जाता है। संग्राम तथा संग्राम सम्बन्धी कर्म जया तिथियों में प्रशस्त हैं।

घ) **रिक्ता तिथि**- चतुर्थी, नवमी और चतुर्दशी को रिक्ता तिथि कहा जाता है। रिक्ता तिथियों में शास्त्रार्थ, घातकर्म, विषप्रयोग, शस्त्रादि कर्म शुभ हैं।

ङ) **पूर्णा तिथि**-पञ्चमी, दशमी, पौर्णमासी को पूर्णा तिथि कहा जाता है। पूर्णा तिथियों में विवाहादि मंगलकार्य, विविध शुभकर्म, शान्तिकर्म शुभ हैं।

च) **अधम तिथियाँ**-इन तिथियों में यात्रा एवं किए गए कार्य असफल होते हैं। यह तिथियाँ वार एवं तिथि के संयोग से बनती हैं-

वार	तिथि
रविवार एवं मंगलवार	1, 6, 11
सोम एवं शुक्र	2, 7, 12
बुध	3, 8, 13
गुरु	4, 9, 14
शनि	5, 10, 15

E-Learning material prepared by Dr. Dhananjay Vasudeo Dwivedi

छ) **पक्षरन्ध्र तिथियाँ**- 4, 6, 8, 9, 12, 14- ये तिथियाँ पक्षरन्ध्र कहलाती हैं। किसी भी प्रकार के शुभ कर्म के लिए रन्ध्र तिथियों के प्रारम्भ की कुछ घटियाँ त्याज्य होती हैं जिसका विवरण अग्रलिखित है-

तिथि	पक्षरन्ध्र की त्याज्य घटियाँ
4	8 घटी तक
6	9 घटी तक
8	14 घटी तक
9	25 घटी तक
12	10 घटी तक
14	5 घटी तक

ज) **मासशून्य तिथियाँ**- मासशून्य तिथियों में किए गए समस्त कार्य असफल होते हैं। किस मास में कौन सी तिथियाँ मासशून्य होती हैं, उसका विवरण निम्नवत है-

मास	मासशून्य तिथियाँ
चैत्र	8 एवं 9 दोनों पक्ष
वैशाख	12 दोनों पक्ष
ज्येष्ठ	13 शुक्ल पक्ष, 14 कृष्णपक्ष
आषाढ	7 शुक्लपक्ष, 6 कृष्णपक्ष
श्रावण	2 एवं 3 दोनों पक्ष
भाद्रपद	1 एवं 2 दोनों पक्ष
आश्विन	10 एवं 11 दोनों पक्ष
कार्तिक	14 शुक्लपक्ष एवं 5 कृष्णपक्ष
मार्गशीर्ष	7 एवं 8 दोनों पक्ष

E-Learning material prepared by Dr. Dhananjay Vasudeo Dwivedi

पौष	4 एवं 5 दोनों पक्ष
माघ	6 शुक्लपक्ष व 5
फाल्गुन	3, 4 शुक्लपक्ष

झ) **दग्ध-विषाक्त-हुताशन तिथियाँ**-वार एवं तिथियों के संयोग से उक्त तिथियाँ बनती हैं। इन तिथियों में शुभ कार्यों को त्यागना की ठीक रहता है।

वार	रवि	सोम	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
दग्धसंज्ञक	12	11	5	3	6	8	9
विषाक्त	4	6	7	2	8	9	7
हुताशन	12	6	7	8	9	10	11

ञ) **सिद्धा तिथियाँ**-वार एवं तिथियों के संयोग से सिद्धा तिथियाँ बनती हैं। इन तिथियों में किए गए कार्य सिद्ध होते हैं। ये तिथियाँ समस्त दोषों को हरने वाली तथा सभी कार्यों में सिद्धि देने वाली होती हैं-

सिद्धा तिथिर्हन्ति समस्तदोषान् सिद्धातिथिः सिद्धिदा स्यात्सर्वकार्येषु शोभना।

यात्रा के लिए सिद्धा तिथियाँ विशेष शुभ मानी जाती हैं।

वार	तिथि
मंगलवार	3, 8, 13 (जया)
बुधवार	2, 7, 12 (भद्रा)
गुरुवार	5, 10, 15 (पूर्णा)
शुक्रवार	1, 6, 11 (नन्दा)
शनिवार	4, 9, 14 (रिक्ता)

ट) **अमृत तिथियाँ**- अमृत तिथियाँ भी वार एवं तिथियों के संयोग से बनती हैं। ये तिथियाँ शुभकार्य के लिए प्रशस्त मनी गयी हैं तथा यात्रा करने के लिए शुभफलप्रद होती हैं-

वार	तिथि

E-Learning material prepared by Dr. Dhananjay Vasudeo Dwivedi

रविवार एवं सोमवार	5, 10, 15 (पूर्णा)
मंगलवार	2, 7, 12 (भद्रा)
गुरुवार	3, 8, 13 (जया)
शुक्रवार	4, 9, 14 (रिक्ता)
बुधवार एवं शनिवार	1, 6, 11 (नन्दा)

अमावस्या तिथि केवल पितृकार्य में शुभ माना जाता है।

E-Learning material prepared by Dr. Dhananjay Vasudeo Dwivedi